Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / January- February 2025 / VOL -01 ISSUE-IV

36

रामदरश मिश्र का यात्रा–साहित्य

डॉ. विक्रम रामचंद्र पवार
देशभक्त संभाजीराव गरड महाविद्यालय– मोहोळ.

प्रस्तावना

रामदरश मिश्र एक प्रतिभासंपन्न रचनाकार हैं । उन्होने ग्रामीन जीवन पर अनेक उपन्यास ; कहानियाँ लिखी हैं । कथाकार रूप में वे ख्याती प्राप्त हैं ही साथ ही वे एक सिद्धहस्त यात्राकार भी हैं । यात्रा साहित्य में इनकी 'पडोस की खुशबू' और 'भोर का सपना' रचनाएँ उल्लेखनीय हैं। 'पड़ोस की खुशबू' रचना में मिश्र जी की साहित्यिक यात्राओं का चित्रण है। इसमें लंदन में भारतीयों का आतिथ्य, आवास अवस्था, हिंदी पर परिचर्चा, कविता पाठ का आयोजन, शेक्सपीयर का स्मारक, मैनचेस्टर का कवि संमेलन, लंदन में संगोष्ठी, स्वामी नारायण मंदिर, बरकिंघम पैलेस, ग्रीन पार्क, मादाम तुसाँ संगहालय की मोम की मूर्तियाँ, कवि संमेलन हेतु नेपाल प्रयाण, पशुपतिनाथ का मंदिर, नेपाली आतिथ्य, भारत–नेपाल संबंध, पाठकों का स्नेह, तिरूवअनंतमपुरम का प्राकृतिक सौंदर्य, कन्याकुमारी का विहंगम समुद्र वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय की संगोष्ठी, शिलांग जाते समय हवाई जहाज से बादलों का विहंगावलोकन, प्राकृतिक परिवेश में सहज रूप में विचरण करनेवाले देहाती, वर्षा का लावण्य, कुहरे का आदिगंत विस्तार, मिश्र जी का दूसरा घर अहमदाबाद, कविसंमेलन का आयोजन अक्षरधाम मंदीर, काशी में मित्र के देहावसान का दुख: पुराने बनारस की स्मृतियाँ, शिवप्रसाद सिंहजी का साहित्यिक उदय, विभिन्न साहित्यकारों का परिचय आदि का यथार्थ भावांकन मिलता है।

रामदरश जी ने अधिकांशत: साहित्यिक गोष्ठियों हेतु ही यात्राएँ की है। अत: इसमें साहित्य एवं साहित्यकारों का परिचय विस्तार से आया है। मिश्र जी ने प्राक्रतिक सौंदर्य से अभिभूत होकर उसका मनोरम अंकन किया है। 'भोर का सपना' रचना में रामदरश मिश्र जी दक्षिण कोरिया को उसकी समग्र विशेषताओं के साथ प्रस्तुत करने का प्रामाणिक प्रयत्न करते हैं। इसमें शिष्य ली का आदरतिथ्य, ली के परिवारजन, दक्षिण कोरिया की शिक्षा व्यवस्था, मानवीय गुणों का सार्वभौमत्व, कांगजू का सीमावाद, नामहान नदी का सौंदर्य, दक्षिण कोरिया की संपन्नता, समाज–जीवन, मनोरंजन केंद्र की सैर, कोरियाई व्यक्तियों का हिंदी प्रेम आदि का यथार्थ चित्रण हुआ है। रामदरश जी के भावूक मन का परिचय कई बार मिलता है। वे हर स्थिति पर अपनी प्रतिक्रियाएँ देते चलते है।

विषय प्रवेश

रामदरश मिश्र के यात्रा साहित्य में यात्रा साहित्य का प्रधान तत्व स्थानियता अपने उत्कर्ष पर दिखाई देती है । मनुष्य की आदिम जिज्ञासाओं में से एक तत्व है आकाश। प्रकाशमान सूय्र, चाँद–तारों से भरी रातें, टूटते तारे, इंद्रधनुष्य आदि आकाश की संपत्ति मानव मनको अत्यंत आकृष्ट करती रही है। आज विभिन्न प्रदेशों में ऐसे कई स्थल है। जहाँ से उदयमान या अस्तांचल सूर्य के दर्शनार्थ लोग इकट्ठा होते हैं। रामदरश मिश्र हवाई जहाज से यात्रा करते समय आकाश का सौंदर्य इस प्रकार आनंदोल्लास से भर देता है– ''जहाज काफी ऊँचाई पर चढ़कर प्राय: समलत पर आ गया था, और इस फेनिल अंधकार से भरे आकाश को चीरता हुआ सीधा आगे बढ़ रहा था। कुहरे की घाटी से निकले ही थे कि एक विराट दृश्य देखाधुनी हुई कपास की तरह सफेद और कोमल, किंतु सधनबादलों के बड़े–बड़े अंबार एक–दूसरे पर लदे पड़े थे। लगा जैसे एक बड़े सफेद गाँव पर दूसरा और दूसरे पर तीसरा गाँव बसा हुआ हो या फिर पर्वत की हिम धवल चोटियाँ एक दूसरे पर लदी हुई हों। विराटता के अहसास से में अभिभूत हो गया, जिसमें आनंद भी था और भय भी। मुझे इन गाँव के आसपास बगीचे दिखाई पड़ने लगे, कुएँ और चौपाल भी लक्षित होने लगे, गलियाँ और रास्ते भी उभर आए। कितने सुंदर गाँव है ये किंतु अभिशप्त–से। यहाँ सब कुछ है, लेकिन मनुश्यों की हलचल नहीं। पूरा आकाश एक रहस्यमय सौंदर्य से आंदोलित हो रहा था। दृश्य पर दृश्य छुट रहे थे। पहाड़ों की घाटियों में से लहराकर उठता हुआ कुहरा एका एक दृष्टि पथ को ढक लेता था, जैसे रात हो गई हो। जहाज उसे चीरकर आगे निकलता जाता था और सूरज की रोशनी पड़ते ही दिन निकल जाता था और सारा का सारा दृश्य धूप के स्पर्श से एक नई आभा से चमक उठता था। दूर नीचे सफेद बादलों के टुकड़े ऐसे लगते थे कि सफेद जल से भरे हुए गड़ढे धरती पर चमक रहे हैं। या धरती पर सफेद–सफेद फूलों के झुरमुट हों।'' यहाँ बादलों के भिन्न–भिन्न रूप–स्वरूपों की सृष्टि का मार्मिक चित्रण हुआ है।

झील का सौंदर्य उसके जल तथा आसपास की हरियाली एवं पर्यटको की भीड़ को भी बताता है। ऐसी ही झील का वर्णन करते हुए रामदरश मिश्र लिखते हैं–''अपराह में हम फिर सैर के लिए निकले। हमें पता होता था कि हमें कहाँ ले लाया जा रहा है। हम तो बस अनुसरण कर रहे थे। इस बार हमने अपने को एक विषाल झील के किनारे पाया। इस झील को हम कल से ही देख रहे थे। कल शाम को जिस पुल पर खड़े होकर हम इस विशाल झील को हसरत–भरी निगाह से देखते रहे थे। हमारी दृष्टि इस झील में खोयी हुई उसके रहस्यमय उस तट तक चली गयी थी जहाँ पता नहीं क्या होगा। आज उसी झील के तट पर खड़े थे। ''झील में सैर करना है।'' ली ने कहा और टिकट लेकर हम अंदर हो लिये। एक बत्तखनुमा स्वचालित नाव झील में तैरती हुई आ

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / January- February 2025 / VOL -01 ISSUE-IV

रही थी। ज्ञात हुआ इसी में चढ़ना है। नाव आयी हम उसमें जा बैठे। हम नाव के खुले हिस्से में बैठना ज्यादा पसंद करते, किंतु ठंडक बढ़ गयी थी और झील के ऊपर तो बहुत ठंडी हवा बह रही थी। अंदर बैठे। '' प्रकृति में एक अनामिक सौंदर्य एवं आकर्षण अवशिष्ट रहता है, जो यात्रियों को आकृष्ट करता है।

कोई यात्रा साहित्यकार किसी देश विशेष की उत्तम शिक्षा पद्धति को देखता है तो उसका उल्लेख अपने अपने यात्रा साहित्य में करता है ताकि संभव होतो शिक्षण संस्थाए भी उसका लाभ उठा सके। दक्षिण कोरिया के स्कूलों में बच्चों के हितो की रक्षा करते हुए उत्तमोत्तम ज्ञान सामग्री उपलब्ध कराई जाती है। शिक्षा के प्रसार पर विचार करते हुए रामदरश मिश्र जी लिखते हैं—'''स्कूल' बहुत बड़ा और सुंदर था। उसका अहाता भी बहुत बड़ा था। उसमें तरह—तरह के फूल खिले हूए थे। प्रिन्सिपल का कमरा वैसा नहीं होता। हमारे यहाँ के प्रायमरी स्कुलों से अलग तरह का यह स्कूल था। प्रत्येक कक्षा में तीस छात्र होते हैं। दिन को छात्रों और शिक्षकों को मुफ्त खाना मिलता है। बारी—बारी से बच्चों के अभिभावक आकर खाना बनाते हैं। स्कूल में झाड़ू बच्चे ही लगाते हैं। सप्ताह में एक दिन मॉनीटर क्लास लोता है। कमरे में कम्प्यूटर रखे हुए थे। ज्ञात हुआ कि उसकी भी क्लास होती है। एक कमरे में नाटक के सामान रखें हुए थे। मालूम हुआ कि बच्चे यहा नाटक करते हैं। यानी प्राईमरी स्कूल से ही विज्ञान और कला की सहयात्रा प्रारंभ हो जाती है। खेलकूद की शिक्षा की भी अच्छी व्यवस्था दिखाई पड़ी।'' यहाँ दक्षिण कोरिया की शिक्षा नीति का परिचय मिलता है।

हिंदू धर्म में तीर्थ यात्राओं का विशेष महत्व है। स्वामी नारायण मंदिर का वर्णन करते हुए रामदरश मिश्र लिखते है, ''क्या भव्य मंदिर है, क्या भव्य परिसर है और भीतर की दुनिया भी भव्यता से भरी हैं। वहां भी गाइउ हमारी प्रतीक्षा करते हैं। कोई डाक्टर है, कोई इंजीनियर है, कोई सी.ओ. है, कोई बैंक आफिसर है। इस मंदिर में एक अच्छी बात यह दिखाई पड़ी कि प्रारंभ में हिंदू धर्म और संस्कृति के मूलभूत सिद्धातों कथाओं और चरित्रों को भित्ति पर अंकित किया गया है। जिससे कोई विदेशी भी एक नजर में हिंदू धर्म और संस्कृति के बुनियादी रूप से समझ सके इस मंदिर को देखते हुए मुझे बार—बार गांधीनगर (गुजरात) का अक्षरधाम याद आ रहा था। लंदन का यह मंदिर तो भव्य ही किंतु अक्षरधाम की तो बात ही अलग है। जब मैंने अक्षरधाम कही बात की तो गाईड ने पूछा— अपने देखा है?'' यहाँ स्वामी नारायण मंदिर अपने पूरे रूपनिखार के साथ उपस्थित हुआ है।

इसी प्रकार मिश्रजी ने ऋतु सौंदर्य; नदी चित्रण; पशु—पक्षी; बंदरगाह; झरना; खेत; पर्यटन; स्थानीय परिवेश; आवास; रहन—सहन; अतिथ्यशीलता; विभिन्न व्यक्ति तथा ऐतिहासिक चरित्र; गाँव; सड़क; वाहन; खान—पान; विदेशियों की दृष्टि में भारत; लोगों का व्यवहार; विभिन्न व्यवस्थाएँ का भी यथार्थ अंकन किया है ।

रामदरश मिश्र के यात्रा साहित्य में 'तत्सम' शब्दों का पर्याप्त प्रयोग किया गया है। रामदरश मिश्र ने 'भोर का सपना' रचना से 'तत्सम' शब्दों का अधिक प्रयोग किया है। रामदरश मिश्र के यात्रा—साहित्य में प्रयुक्त 'तद्भव' शब्द—सूरज, हाथ, घर, गाँव, रात, दुखी, सपना, चाँद, अचरण, दोपहर, निहारना इ हैं ।

रामदरश मिश्र के यात्रा साहित्य में अंग्रेजी भाषा के शब्दों का अधिक्य देखने को मिलता है। इसका कारण यह है कि अधिकांशत: यात्राकार विदेशों में संवाद स्थापन हेतु अंग्रेजी भाषा का ही प्रयोग करते हैं। साथ ही हिंदी भाषा में प्रचलित हो चुके अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग भी यथास्थान किया गया है। दक्षिण कोरियाई अन्येहस्मिका (नमस्ते)। रामदरश मिश्र 'भोर का सपना' रचना में मुहावरों का उचित प्रयोग करते हैं।

रामदरश मिश्र ने विभिन्न शैलियों का प्रयोग किया है । जो स्थितियाँ समाज को क्षत—विक्षत करती है, यात्राकार उन्हें अनदेखा नहीं करता बल्कि उनपर व्यंग्यात्मक प्रतिक्रिया देता चलता है। रामदरश मिश्र कहते है, ''कहकर मैं चुप हो गया और सोचने लगा कि यात्रा रद्द करने का जो कार्य मैं चाहकर भी पूरा नहीं कर सका, उसे यह वीर अनजाने ही पूरा किए दे रहा है। लेकिन अब यह यात्रा निशेध मुझे प्रिय नहीं लगेगा। मैं अपने में खोया रहा और वह वीर कंम्प्यूटर पर हाथ मारता रहा। फिर उसने मुझे बोर्डिंग कार्ड यों पकडाया जैसे रहम कर रहा हो कि जा तेरा नाम तो नहीं था लेकिन मेहरबानी करके दिये दे रहा हूँ। फिर उसने मुझे समझाया कि हांगकांग में यह कह दीजिएगा। उसने क्या कहा, मैं समझ नहीं सका किंतु मन में एक भश्या समा गया कि लगता है हांगकांग में भी हमारा नाम नहीं पहुँचा होगा और यह आदमी वहाँ संबंध कर्मचारी से कुछ निवदेन करने के लिए कह रहा है। मन में समाया यह भय हांगावंग तक साथ नहीं छोड सका। यहाँ तो ठीक है नाम नहीं है तो घर लौंट जाऊँगा। वहाँ कुछ गड़बड़ी हुई तो कहाँ जाऊँगा।''

यात्रा साहित्य में संस्कृत, अरबी, फारसी शब्दों के साथ ही भारत के विविध भाषाओं बोलियों तथा विश्व की कई भाषाओं के शब्दों का परिचय मिलता है। यात्राकारों ने मुहावरे एवं कहावतो का भी विस्तुत प्रयोग किया है। विविध विषयों से संदर्भित सूक्तियों का भी मार्मिक प्रयोग हुआ है। शैली के अंतर्गत वर्णनात्मक शैली में प्रकृति के उपादानों का मार्मिक अंकन किया है। काव्यात्मक शैली में उद्दीप्त भावनाओं को प्रस्तुत किया है। विविध दोशों एवं खामियों पर व्यंग्यात्मक शैली में प्रहार किया गया है। अलंकृत शैली से भिन्न व्यक्तियों की मानसिकता एवं भाषा—बोली का यथार्थ परिचय दिया गया है।

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / January- February 2025 / VOL -01 ISSUE-IV

निष्कर्ष –डॉ. रामदरश मिश्र जी के यात्रा संस्मरण पठनीय हैं साथ ही सामाजिक स्थितियों, सांस्कृतिक परंपराओं रीति रिवाजो, भौगोलिक छवियों, प्रकृति के विभिन्न रूपों समय की चुर्नातियों आदि के दस्तावेज रूप भी हैं। मिश्र जी 'भोर का सपना', 'पड़ोस की खुशबू' इन रचनाओं में भी न कहीं विद्वता का प्रदर्शन करते है, न कहीं भी पाठक को उबने देते हैं। किसी भी घटना के साथ जब पाठक जुड़ता है तो वह आत्मीयता से भावविभोर हो जाता है। तथा लेखक की भावनाओं से अनायास ही जुड़ जाता है। यात्रा संस्मरणों में लेखक की तटस्था, भावनात्मकता, विनोदप्रिय–वृत्ति, खुले मन की हँसी किसी घटना पर खेद व्यक्त करना सभी कुछ जीवन के अंग बन जाते हैं। मिश्र जी की सूक्ष्म पर्यवेक्षण शक्ति सही अर्थों में जीवन संदर्भों की पहचान कराती हैं। जीवन के विभिन्न रूप प्रदर्शित करने वाले संस्मरण उपन्यास की लय उपन्न कराते हैं। मिश्र जी इन यात्रा संस्मरणों में कभी विदेशी शक्तियों पर कभी अपने नेताओं पर, कभी सामाजिक, राजनैतिक स्थितियों पर, कभी स्त्रियों की स्थिति पर, कभी साहित्यिक प्रष्नों पर तो कभी राष्ट्रभाषा की उपेक्षा यात्रा–वृत्त में बनावाटीपन का स्पर्ष नहीं हैं। देश हो या विदेश उनके यात्रा–वृत्त में मनुष्य से गहरे संवाद का स्वर हैं। तभी तो पाठक रचना की अनुभूति से तादाम्य स्थापित कर देता हैं। अत: डॉ. रामदरश मिश्र का यात्रा –साहित्य वर्ण्य विषय की रोचकता प्रसंगों की यथार्थता, जीवन के कटु–मधुर अनुभवों का समन्वय है।

संदर्भ सूची

१. भोर का सपना रामदरश मिश्र
२. पडोस की खुशबू रामदरश मिश्र
३. रामदरश मिश्र का गद्य साहित्य डॉ. नाना गायकवाड
४. रामदरश मिश्र : व्यक्ति और अभिव्यक्ति जगन सिंह
५. रामदरश मिश्र : व्यक्तित्व एवं कृतित्व डॉ. फूलबदन यादव
६. बेरंग बेनाम चिट्ठीयॉ रामदरश मिश्र